दिव्य लीलामृत

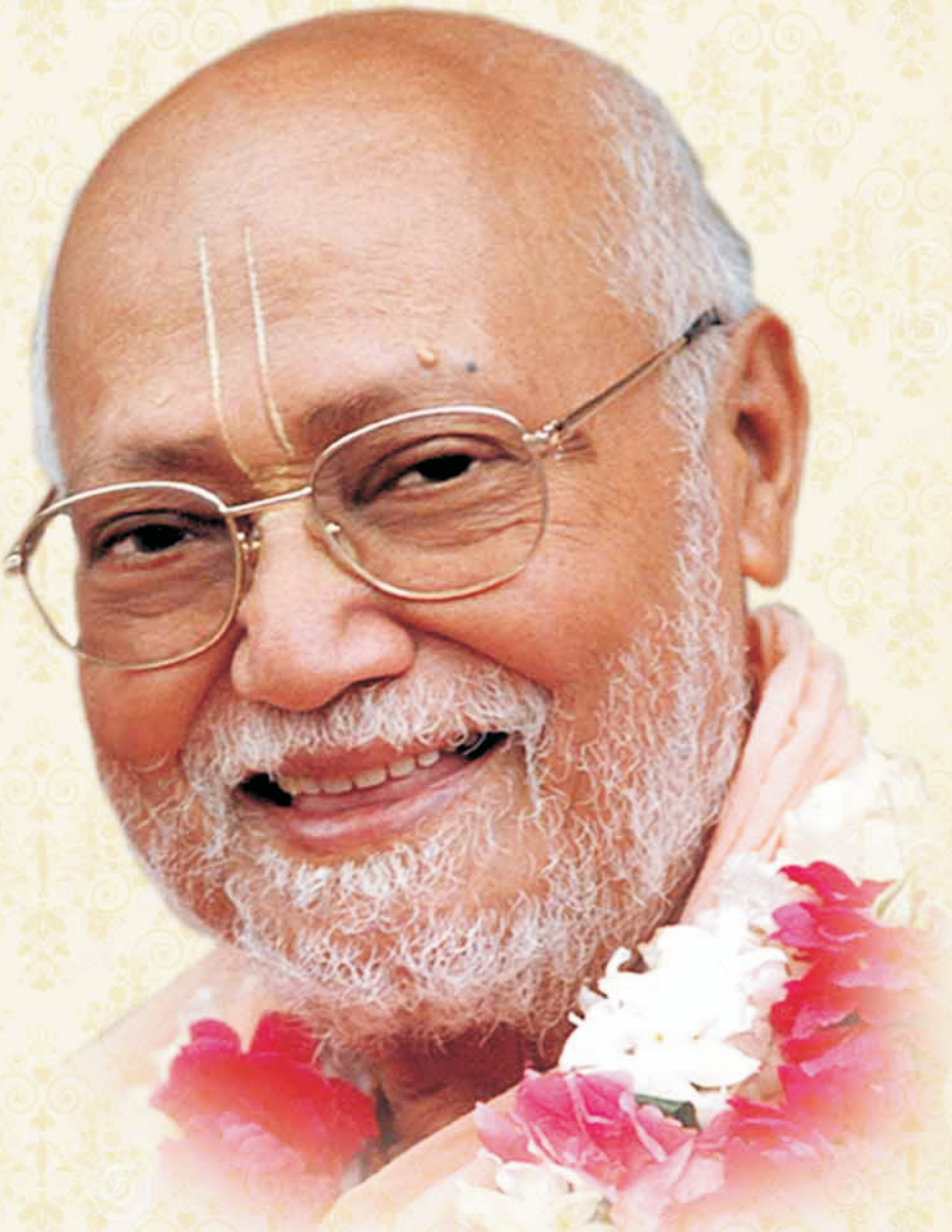

एक उज्ज्वल तारे का अन्तर्धान

श्रीलगुरुदेव

कीर्तन की ध्वनि से रोमांचित कोलकाता मठ का अद्भुत वातावरण और श्रील गुरुदेव के शिष्यों का उनके प्रति समर्पण भाव-ये दोनों को देखकर कीर्तन में सम्मिलित हुए अन्य गौड़ीय संस्थाओं के भक्त मंत्रमुग्ध हो गए। वे कहने लगे, "हमारे गुरुदेव के अंतर्धान के समय, हम इस बात से अवगत नहीं थे कि हम उनकी प्रसन्नता

के लिए अखण्ड कीर्तन के द्वारा उनकी इस प्रकार से सेवा कर सकते थे। मठ की ओर से न तो ऐसी कोई व्यवस्था की गई थी और न ही ऐसा कोई सुझाव मिला।" किन्तु वास्तविकता तो यह थी कि हम भी इस विषय से अनभिज्ञ थे कि एक आचार्य अथवा गुरु की इस प्रकार की लीला के समय उनकी सेवा कैसे की जाती है, और न ही मठ की ओर से ऐसी कोई व्यवस्था की गई थी। यह व्यवस्था तो केवल और केवल मात्र श्रील गुरुदेव के

द्वारा प्रेरित और चालित थी, अन्यथा, कोई ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकता था। इतने वर्षों से श्रील गुरुदेव का निस्वार्थ एवं शुद्ध वात्सल्य प्रेम प्राप्त कर, भक्त अब इस तरह से उनके प्रति अपना प्रेम व्यक्त कर रहे थे।

कोलकाता मठ के मनमोहक परिवेश के बारे में बोलते हुए परम पूज्यपाद श्रील भक्ति निकेतन तुर्याश्रमी महाराज ने कहा, "श्रील प्रभुपाद

के कई शिष्यों के नित्य-लीला में प्रवेश करते समय, मुझे उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिला। मैंने देखा कि दूर-दूर से उनके शिष्य उनके पास आते, सेवा के लिए कुछ प्रणामी देते और एक या दो दिन के बाद अपने घर लौट जाते। किन्तु श्रील महाराज के विषय में मैं देख रहा हूँ कि जो कोई व्यक्ति उनके दर्शन के लिए आ रहा है, वह अपने घर-परिवार की चिंता नहीं करते हुए उनके पास ही रहकर प्रीतियुक्त समर्पण भाव के साथ

उनकी सेवा कर रहा है। अपने पूरे जीवनकाल में, मैंने इस प्रकार का कोई दृश्य नहीं देखा। श्रील महाराज ने बहुत उदार भाव से अपने प्रेम, स्नेह व कृपा को सर्वत्र वितरण किया, और उसी का प्रभाव है भक्तों का उनके प्रति इस प्रकार का समर्पण और कृतज्ञ भाव।"

चैत्र मास की कृष्ण-नवमी तिथि आई, दिनांक अप्रैल 20,2017 गुरुवार। देखते ही देखते हमने उच्च स्वर से अत्यंत

उत्साह के साथ चल रहे संकीर्तन के सप्तम दिवस में प्रवेश किया। इन सात दिनों में भक्तों का कीर्तन में उत्साह और तीव्रता लेशमात्र भी कम नहीं हुए बल्कि बढ़ते ही रहे। एक ही समय में श्रीमद्भगवद् गीता, श्रीमद्भागवतम्, श्रीचैतन्य चरितामृत, श्रीचैतन्य भागवत् का पाठ अविश्राम चल रहा था । पूर्व दिनों की भाँति उस दिन भी श्रील गुरुदेव ने भक्तों को बार-बार दर्शन दिया। उल्लासमय कीर्तनों के साथ दिन का समय समाप्त

हुआ और कृष्ण-पक्ष के नवमी का आंशिक चंद्र आकाश में दीप्तिमान था। दूसरी ओर श्रील गुरुदेव का मुखमण्डल पूर्णचन्द्र की भाँति उज्ज्वलित था। निस्संदेह, उस दिन उनके चन्द्रवदन पर एक अभूतपूर्व चमक थी। यद्यपि बाहर से सब कुछ पिछले छह दिनों की भाँति ही होता दिखाई दे रहा था, फिर भी उस दिन की संध्या के समय से ही हृदय के भीतर में कुछ विशेष अनुभव हो रहा था। भक्तगण रात्रि का प्रसाद ग्रहण

के बाद आनंदमय संकीर्तन में दुबारा जुड़ रात्रि के 10:15 बजे थे, श्रील गुरुदेव का प्रिय कीर्तन 'राधा-कुण्ड तट कुंज कुटीर' गाया जा रहा था, उस समय श्रील गुरुदेव ने इस जगत् में अपनी लीला समापन कर श्रीश्रीराधा-गोविंद की नित्य-लीला में प्रवेश किया।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी, जो मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचंद्र की आविर्भाव तिथि है, उसको अवलम्बन कर

वैष्णव-मर्यादा के संवर्धक एवं संरक्षक आचार्य श्रील गुरुदेव धराधाम में आविर्भूत हुए, और उसी मास के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को अवलम्बन कर उन्होंने पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्णचन्द्र के नित्य गोलोक-धाम में पुनः प्रवेश किया। एक और तात्पर्य यह है कि—शुक्ल नवमी, जिसे गौर-नवमी भी कहा जाता है, उस तिथि पर श्रील गुरुदेव आविर्भूत हुए और उन्होंने श्रीगौरांग महाप्रभु की भाँति निरंतर कृष्णकीर्तन में निमज्जित

रहकर नाना प्रकार के अप्राकृत भाव स्वयं आस्वादन कर जगत् में प्रचार किया; और कृष्ण नवमी तिथि पर उन्होंने सभी वैकुण्ठ धामों के मुकुटमणि गोलोक-धाम में पुनः प्रवेश किया।

श्रील गुरुदेव के नित्य-लीला में प्रवेश का समय (रात्रि के 10:15 बजे) भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह समय दिन के 7वें और 8वें याम*

दिन और रात (24 घंटे) को

आठ प्रहरों में विभाजित किया गया है। एक प्रहर को 'याम' बोला जाता है। रात्रि में तीन याम, और दिन में तीन याम होते हैं। इन छह यामों के साथ, भोर और संध्या को जोड़कर कुल आठ याम या प्रहर होते हैं। के संगम का समय है, अर्थात् विप्रलम्भ-प्रेम (विरह का प्रेम) से संभोग-प्रेम (मिलन का प्रेम) में प्रवेश का समय। जब विरह असहनीय हो जाता है तब मिलन निकट होता है, और विरह के बाद के मिलन में तो अधिक

आनंद का अनुभव होता है। पिछले कुछ वर्षों में, भक्तों ने श्रील गुरुदेव को उनके गुरुदेव के विरह में अत्यंत कातरता से क्रंदन करते हुए कई बार देखा भी था। अर्थात् श्रील गुरुदेव के अपने गुरुदेव से विरह के इतने वर्षों के बाद उनके साथ नित्य-लीला में पुनः मिलन कितना हर्षमय हुआ होगा, इसका वर्णन कोई नहीं कर पाएगा।

दूसरी ओर, इस संसार में,

श्रील गुरुदेव के शिष्य और स्नेहपात्र उनके विरह की कातर अवस्था में क्रंदन करने लगे। एक के बाद एक, उन्होंने श्रील गुरुदेव की कुटीर में प्रवेश कर उनको दण्डवत प्रणाम किया और उनकी परिक्रमा की। वे सब विरह का तीव्र दुःख अनुभव कर रहे थे, और उनके नेत्रों से अश्रु थम नहीं रहे थे। उनमें से कोई-कोई चीत्कार कर रहे थे, कोई-कोई अचेत अवस्था में भूमि पर गिर पड़े, तो और कोई अपने अश्रुओं से उनके चरण-कमलों का

प्रक्षालन कर रहे थे। कुछ भक्त तो मानो जैसे प्राणहीन ही हो गए थे। इस प्रकार, हताशा और गहरी पीड़ा की स्थिति में रात भर संकीर्तन चलता रहा।

यद्यपि कुछ वर्षों से श्रील गुरुदेव ने सभी भक्तों को इस दिन के लिए धीरे-धीरे तैयार किया था ताकि वे उनके अप्रकट होने के बाद कम से कम विरह का दुःख अनुभव करें, फिर भी प्रत्येक भक्त व्याकुल था। पिछले कुछ वर्षों में, और विशेष रूप से

रोमांचित कर देनेवाले पिछले सात दिनों में, भले ही वे कुछ बोलते नहीं थे या बाहरी रूप से कोई आदान-प्रदान नहीं करते थे, किन्तु उनकी प्रत्यक्ष उपस्थिति तो थी। परन्तु 'अब उनका दर्शन इस भौतिक जगत् में और संभव नहीं है'—इस विचार मात्र ने भक्तों के हृदय को विदीर्ण कर दिया। उनके लिए यह एक महाप्रलय से कुछ कम नहीं था। और, हम सेवकों का तो जैसे सर्वस्व ही लुट गया। पूरा वातावरण हृदय विदारक

था, किन्तु साथ ही साथ हृदय को पवित्र कर देनेवाला भी।

इस जगत् से अपनी तिरोधान लीला के द्वारा, शुद्ध भक्त हमें कई शिक्षाएं देते हैं। अन्य-अन्य शिक्षाओं के अंतर्गत मुख्य रूप से–1) यह जगत् रहने के लिए स्थायी स्थान नहीं है, प्रत्येक व्यक्ति को एक न एक दिन इसे छोड़कर जाना ही पड़ेगा;*

'आजि वा शतेक वर्षे अवश्य मरण, निश्चिन्त ना थाक ताई।

यतशीघ्र पार भज श्रीकृष्णचरण, जीवनेर ठीक नाई।।' अर्थात्, मृत्यु अवश्य ही आएगी, आज हो या शत वर्षों में, इसलिए इतना निश्चिन्त होकर मत जीओ। तुरंत श्रीकृष्ण के चरण कमलों का भजन आरम्भ करो, क्योंकि इस जीवन की कोई निश्चितता नहीं है। (श्रील भक्तिविनोद ठाकुर द्वारा लिखित कल्याण कल्पतरु से)

2) हमें जागतिक इन्द्रियों पर अपनी निर्भरता से

पूरी तरह मुक्त होना चाहिए, ताकि हम भक्तिमय नेत्रों से भक्तों के अप्राकृत स्वरूप का दर्शन, श्रद्धायुक्त कर्णों के माध्यम से उनके निर्देशों का श्रवण एवं विशुद्ध भक्तों चित्त से उनके अनुग्रह का अनुभव करने योग्य बन पाएं। हमें केवल शुद्ध भक्तों के बाहरी रूप को ही महत्व नहीं देना चाहिए, बल्कि हमें अपनी निष्कपट सेवा चेष्टाओं के द्वारा उनके वास्तविक स्वरूप का दर्शन करने के लिए हमारे हृदय को तैयार करना चाहिए।

इस धरातल पर श्रील गुरुदेव का दिव्य आविर्भाव, बाल्य अवस्था की ध्यान आदि क्रियाएं, पारमार्थिक पथ की ओर तीव्र आकर्षण, उनके गुरुदेव के साथ मिलन और समर्पण, इत्यादि उनकी बहुत लीलाओं के प्रत्यक्ष दर्शन से अधिकांश लोग वंचित रह गए थे–उन विषयों के बारे में केवल श्रवण करने का सौभाग्य हुआ। किन्तु अपनी शिष्य-वात्सल्यता के कारण, उन्होंने अब हमें न केवल उनकी अद्वितीय तिरोभाव

लीला का साक्षी बनाया, बल्कि कीर्तन सेवा के माध्यम से उसमें भाग लेने का भी अवसर प्रदान किया।

श्रील गुरुदेव ने अपने अंतिम दिनों की अपूर्व लीला के माध्यम से सभी विश्व-वासियों को इस जगत् को छोड़कर जाने की सर्वश्रेष्ठ शैली भी दिखलाई। और, श्रील गुरुदेव जैसे अद्वितीय आचार्य, जिन्होंने कई दशकों तक श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रचारित श्रीकृष्ण नाम संकीर्तन

अभियान की पताका को उन्नत से उन्नत शिखरों पर लहराया था, उनको भक्तों से जिस प्रकार की विदाई मिली, वह पूर्ण रूप से उपयुक्त थी।

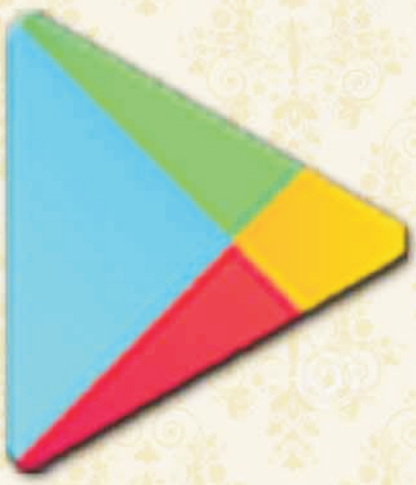

Play Store

SrilaGurudeva